भगवान महाकालेश्वर की पवित्र अवन्तिका नगरी एवं संस्कृति पुरूष विक्रम संवत प्रवर्तक उज्जयिनी नरेश विक्रमादित्य के विद्यानुरागी न्यायशील तेजस्वी व्यक्तित्व की कीर्ति गाथा शताब्दियों से प्रतिष्ठित है। विदेशी आक्रान्ताओं को पराजित करने वाले जननायकों की परंपरा के पुरोधा सम्राट विक्रमादित्य उनके नवरत्न धन्वन्तरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, वेतालभट्ट, घटखर्पर, कालिदास, वाराहमिहिर तथा वररुचि उज्जयिनी के विद्यापीठ से एकाकार पवित्र भूमि पर विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन की स्थापना कार्तिक कृष्ण विक्रमाब्द् 2013 को हुई। विक्रम विश्वविद्यालयए उज्जैन कार्तिक कृष्ण विक्रमाब्द् 2081; 20 अक्टूबर 2024, दिन रविवार को अपने अड़सठ बसन्त पूर्ण कर अध्ययन, अध्यापन एवं ज्ञान, विज्ञान की गरिमामय परंपरा अक्षुण्य है। विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के आधारशिला दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को शुभकामनाएं बधाई एवं अभिनन्दन।

प्रो अर्पण भारद्वाज
कुलगुरु
विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन